नईदुनिया

संपादकीय

हाकी में चमकदार कांस्य पदक

पेरिस ओलंपिक में विनेश फोगाट के साथ हुए अप्रिय घटनाक्रम से आहत भारतीयों के टूटे दिलों पर हॉकी टीम ने कांस्य पदक जीतकर मरहम ही लगाई है। हॉकी टीम ने स्पेन को 2-1 से हराकर कांस्य पदक देश के नाम किया। टीम ने लगातार दूसरे ओलंपिक में भी हॉकी का कांस्य पदक भारत की झोली में डाला। टीम की दृढ़ता व टीम भावना के चलते यह कामयाबी मिली है। अपने इस परंपरागत खेल से भारतीयों का भावनात्मक लगाव सदैव रहा है, जिसको भारतीय टीम ने संबल ही दिया। निस्संदेह, इससे हॉकी की लोकप्रियता को बढ़ावा मिलेगा। उल्लेखनीय है कि भारतीय टीम ने मजबूत टीमों को हराकर सेमीफाइनल में जगह बनायी थी। हालांकि, वह अपने एक मजबूत खिलाड़ी की अनुपस्थिति में सेमीफाइनल में जर्मनी से हार गई थी। लेकिन कांस्य पदक जीतने के बाद हॉकी टीम से खेल प्रेमियों ने कहा कि यह उपलब्धि सोने की चमक से कम नहीं है। हालांकि एक समय था कि अंतिम मुकाबले में स्पेन एक शून्य की बढ़त लिए हुए था, लेकिन भारतीय टीम ने न केवल खेल में वापसी की बल्कि स्पेन को 2-1 से हराया भी। उल्लेखनीय है कि भारतीय हॉकी टीम ने टोक्यो ओलंपिक में भी कांस्य पदक जीता था। पेरिस ओलंपिक के अंतिम मुकाबले में कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने कप्तान वाली पारी खेली। उन्होंने पेनल्टी कॉर्नर से गोल करके पहले स्कोर बराबर किया और फिर दूसरे गोल से प्रतिपक्षी टीम पर अजेय बढ़त ले ली। जर्मनी से हुए मुकाबले में जिस फर्स्ट रशर अमित रोहिदास की कमी खली थी, अंतिम मुकाबले में उन्होंने अपनी सार्थक उपस्थिति दर्ज की। उल्लेखनीय है कि ग्रेट ब्रिटेन के खिलाफ रोहिदास को रेड कार्ड मिला था। जिसके चलते उन पर एक मैच खेलने का प्रतिबंध लगा था। यही वजह कि जर्मनी के मुकाबले में उनकी कमी टीम को खली थी। कालांतर में भारत ने जर्मनी के खिलाफ मैच 3-2 से गंवाया था।

बहरहाल, पेरिस ओलंपिक के विभिन्न मुकाबलों में सशक्त नजर आ रही टीम जर्मनी के साथ सेमीफाइनल में मिली शिकस्त के बाद स्वर्णिम सफलता से वंचित हो गई। हालांकि, ओलंपिक में तेरह पदक जीतने वाली भारतीय हॉकी टीम का अतीत शानदार रहा है। खासकर हिटलर की उपस्थिति वाले बर्लिन ओलंपिक में मेजर ध्यानचंद के खेल और स्वर्ण पदक की चर्चा गाहे-बगाहे होती रहती है। ओलंपिक के इतिहास में भारत ने आठ स्वर्ण, एक रजत और चार कांस्य पदक जीते हैं। हालांकि, वर्ष 1980 के मास्को ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतने के बाद फिर टीम सुनहरी सफलता से वंचित रही। उसके बाद तो पदकों का सूखा 41 साल बाद टोक्यो ओलंपिक में मिले कांस्य पदक से टूटा। हालांकि, भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने 52 साल बाद लगातार दो ओलंपिक में पदक जीतने का गौरव हासिल किया है। यद्यपि पेरिस ओलंपिक में मजबूत मानी जा रही टीम टोक्यो ओलंपिक के पदक का रंग नहीं बदल सकी, लेकिन उसकी कामयाबी से परंपरागत भारतीय खेल की प्रतिष्ठा फिर स्थापित हुई। बहरहाल, इस बार ग्रुप स्टेज में मजबूत टीमों की उपस्थिति के बावजूद टीम का प्रदर्शन तीसरे स्थान के मुकाबले तक शानदार ही रहा। फर्क इतना ही रहा कि जहां टोक्यो मुकाबले में भारतीय टीम ने जर्मनी को हराकर कांस्य पदक जीता था, वहीं इस बार जर्मनी से हारकर वह स्वर्ण पदक से दूर हो गई। इस ओलंपिक में आस्ट्रेलिया-ब्रिटेन को हराना उसकी बड़ी उपलब्धि भी रही। विश्वास किया जाना चाहिए कि 1928 में पहली बार ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतकर भारतीय हॉकी टीम ने जो स्वर्णिम उपलब्धियां हासिल की, निकट भविष्य में वह उसे जरूर दोहरायेगी। फिर कोई ध्यान चंद जैसा दिग्गज भारतीय टीम को मिलेगा। वहीं दूसरी ओर पेरिस ओलंपिक को प्रतिद्वंद्वी टीम के खिलाफ गोल पोस्ट में चट्टान की तरह खड़े रहने वाले सफल गोलकीपर पी.आर. श्रीजेश की विदाई के रूप में भी याद किया जाएगा। अंतिम मुकाबले में टीम को जीत दिलाने में बड़ी भूमिका निभाने वाले श्रीजेश ने वही जुनून और जज्बा दिखाया, जो कोई खिलाड़ी अपने पहले मैच में दिखाता है। उन्होंने स्पेन द्वारा किये गए अधिकांश हमलों को विफल बनाकर टीम की जीत को सुनिश्चित किया।

भारत की आर्थिक प्रगति हिन्दू सनातन संस्कृति के संस्कारों में निहित है

दृष्टिकोण

– प्रहलाद सबनानी

भारत पिछले लगभग 2000 वर्षों के कालखंड में से अधिकतम समय (लगभग 250 वर्षों के कालखंड को छोड़कर) पूरे विश्व में एक आर्थिक ताकत के रूप में अपना स्थान बनाने में सफल रहा है और इसे सोने की चिड़िया कहा जाता रहा है। वर्ष 712 ईसवी में भारत पर हुए आक्रांताओं के आक्रमण के बाद भी भारत की आर्थिक प्रगति पर कोई बहुत फर्क नहीं पड़ा था। परंतु, वर्ष 1750 ईसवी में अंग्रेजों (ईस्ट इंडिया कम्पनी के रूप में) के भारत में आने के बाद से भारत की आर्थिक प्रगति को जैसे ग्रहण ही लग गया था।

किसी भी देश में सत्ता का व्यवहार उस देश के समाज की इच्छा के अनुरूप ही होने के प्रयास होते रहे हैं। जब जब सत्ता द्वारा समाज की इच्छा के विपरीत निर्णय लिए गए हैं अथवा समाज के विचारों का आदर सत्ता द्वारा नहीं किया गया है तब तब उस देश में सत्ता परिवर्तन होता हुआ दिखाई दिया है। लोकतंत्र में तो सत्ता की स्थापना समाज द्वारा ही की जाती रही है। साथ ही, किसी भी देश की आर्थिक प्रगति के लिए देश में शांति बनाए रखना सबसे पहली आवश्यकता मानी जाती है और देश में शांति स्थापित करने के लिए भी समाज का विशेष योगदान रहता आया है। समाज में विभिन्न मत पंथ मानने वाले नागरिक ही यदि आपस में सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाएंगे तो देश में शांति किस प्रकार स्थापित की जा सकेगी।

भारत के नागरिकों में आज स्व के भाव के प्रति जागृति दिखाई देने लगी है और वे भारत के हित सर्वोपरि हैं की चर्चा करने लगे हैं। परंतु, भारत में तंत्र अभी भी मां भारती के प्रति समर्पित भाव से कार्य करता हुआ दिखाई नहीं दे रहा है, जिससे कभी कभी असामाजिक तत्व अपने भारत विरोधी एजेंडा पर कार्य करते हुए दिखाई दे जाते हैं और भारत के विभिन्न समाजों में अशांति फैलाने में सफल हो जाते हैं। अत: समाज के विभिन्न वर्गों के बीच यह जागरूकता फैलाने की आज महती आवश्यकता है कि भारत आज आर्थिक प्रगति के जिस मार्ग पर तेजी से आगे बढ़ रहा है ऐसे समय में देश में शांति स्थापित करने की भरपूर आवश्यकता है। क्योंकि, देश में यदि शांति नहीं रह पाती है तो विदेशी संस्थान भारत में अपनी विनिर्माण इकाईयों को स्थापित करने के प्रति हतोत्साहित होंगे और देश की आर्थिक प्रगति विपरीत रूप से प्रभावित होगी।

भारत पिछले लगभग 2000 वर्षों के कालखंड में से अधिकतम समय (लगभग 250 वर्षों के कालखंड को छोड़कर) पूरे विश्व में एक आर्थिक ताकत के रूप में अपना स्थान बनाने में सफल रहा है और इसे सोने की चिड़िया कहा जाता रहा है। वर्ष 712 ईसवी में भारत पर हुए आक्रांताओं के आक्रमण के बाद भी भारत की आर्थिक प्रगति पर कोई बहुत फर्क नहीं पड़ा था। परंतु, वर्ष 1750 ईसवी में अंग्रेजों (ईस्ट इंडिया कम्पनी के रूप में) के भारत में आने के बाद से भारत की आर्थिक प्रगति को जैसे ग्रहण ही लग गया था। आक्रांताओं एवं अंग्रेजों ने न केवल भारत को जमकर लूटा बल्कि भारत की संस्कृति पर भी बहुत गहरी चोट की थी और भारत के नागरिक जैसे अपनी जड़ों से कटकर रहने लगे थे। आक्रांताओं एवं अंग्रेजों के पूर्व भी भारत पर आक्रमण हुए थे, शक, हूण, कुषाण आदि ने भी भारत पर आक्रमण किया था परंतु लगभग 250/300 वर्षों तक भारत पर शासन करने के उपरांत उन्होंने अपने आपको भारतीय सनातन संस्कृति में ही समाहित कर लिया था।

इसके ठीक विपरीत आक्रांताओं एवं अंग्रेजों का भारत पर आक्रमण का उद्देश्य भारत की लूटखसोट करने के साथ ही अपने धर्म एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार करना भी था। आक्रांताओं ने जोर जबरदस्ती एवं मारकाट मचाकर भारत के मूल नागरिकों का धर्म परिवर्तन कर मुसलमान बनाया तो अंग्रेजों ने लालच का सहारा लेकर एवं दबाव बनाकर भारतीय नागरिकों को ईसाई बनाया। इन्होंने भारतीय नागरिकों के मन में सनातन हिंदू संस्कृति के प्रति घृणा पैदा की एवं अपनी पश्चिमी सभ्यता से ओतप्रोत संस्कृति को बेहतर बताया। अंग्रेज भारतीय नागरिकों के मन में ऐसा भाव पैदा करने में सफल रहे कि पश्चिम से चला कोई भी विचार भारतीय सनातन संस्कृति के विचार से बेहतर है। जबकि आज इस बात के पर्याप्त प्रमाण मिल रहे हैं कि पश्चिम द्वारा किए गए लगभग समस्त आविष्कारों के मूल में भारतीय सनातन संस्कृति की ही छाप दिखाई देती है और उन्होंने यह विचार भारतीय वेद, पुराण एवं उपनिषदों से ही लिए गए प्रतीत होते हैं।

कुछ विदेशी ताकतों द्वारा भारत में आज एक बार पुन: इस प्रकार के प्रयास किए जा रहे हैं कि हिंदू सनातन संस्कृति को मानने वाले हिंदू समाज को किस प्रकार आपस में लड़ाकर छिन्न-भिन्न किया जाय। आज भारत में एक ऐसा विमर्श खड़ा करने का प्रयास हो रहा है कि देश में हिंदू हैं ही नहीं बल्कि सिक्ख हैं, दलित हैं, राजपूत हैं, जैन हैं आदि आदि। देश में जातियों के आधार पर जनसंख्या की मांग की जा रही है ताकि देश में प्रदान की जाने वाली समस्त सुविधाओं को हिंदू समाज की विभिन्न जातियों की जनसंख्या के आधार पर वितरित किया जा सके। जिससे अंतत: देश में विभिन्न जातियों के बीच झगड़े पैदा हों और इस प्रकार भारत को एक बार पुन: गुलाम बनाए जाने में आसानी हो सके। विदेशी ताकतों द्वारा आज भारत के एकात्म समाज को टूटा-फूटा समाज बनाए जाने के प्रयास किए जा रहे हैं। प्राचीन भारत में वनवासी थे, ग्रामवासी थे, नगरवासी थे, इस प्रकार त्रिस्तरीय समाज था। भारतीय समाज विभिन्न जातियों में बंटा हुआ था ही नहीं। यह अंग्रेजों का षड्यंत्र था कि भारत में उन्होंने समाज को बांटो और राज करो की नीति अपनाई थी। अन्यथा हिंदू समाज तो भारत में सदैव से एकात्म भाव से रहता आया है। किसी भी देश में क्रांति सत्ता से नहीं आती है बल्कि समाज द्वारा ही क्रांति की जाती है। जिस प्रकार का समाज होगा उसी प्रकार की सत्ता भी देश में स्थापित होगी। अत: किसी भी देश को विकास की राह पर जाने से रोकने के लिए उस देश की संस्कृति को ही समाप्त कर दो। ऐसा प्रयास आज पुन: विदेशी ताकतों द्वारा भारत में किया जा रहा है।

परंतु, अब एक बार पुन: भारत एक ऐसे कालखंड में प्रवेश करता दिखाई दे रहा है जिसमें आगे आने वाले समय में विशेष रूप से आर्थिक क्षेत्र में भारत की तूती पूरे विश्व में बोलती हुई दिखाई देगी। ऐसे में कुछ देशों द्वारा भारत की आर्थिक प्रगति को विपरीत रूप से प्रभावित करने के लिए कई प्रकार की बाधाएं खड़ी किए जाने के प्रयास किए जा रहे हैं। परंतु, देश में निवासरत लगभग 80 प्रतिशत आबादी हिंदू सनातन संस्कृति की अनुयायी है एवं हिंदू समाज में व्याप्त लगभग समस्त जातियों, मत, पंथों को मानने वाले नागरिकों में त्याग, तपस्या, देश प्रेम का भाव, स्व-समर्पण का भाव कूट-कूट कर भरा है। इसी कारण से यह कहा भी जाता है कि केवल हिंदू जीवन दर्शन ही आज पूरे विश्व में शांति स्थापित करने में मददगार बन सकता है। भारतीय जीवन प्रणाली अपने आप में सर्व समावेशक है। हिंदू सनातन धर्म का अनुपालन करने वाले नागरिक पशु, पक्षी, वनस्पति, पहाड़, नदियों आदि में भी ईश तत्त्व का वास मानते हैं और उनकी पूजा भी करते हैं। हिंदू सनातन संस्कृति के संस्कारों में पला बढ़ा नागरिक अपने विचारों में सहिष्णु होता है तथा सभी जीवों में प्रभु का वास देखता है इसलिए वह हिंसा में बिल्कुल विश्वास नहीं करता है। इसी के चलते यह कहा जा रहा है कि विश्व के कई देशों में लगातार बढ़ रही हिंसा को नियंत्रित करने में हिंदू सनातन संस्कृति के अनुयायी ही सहायक हो सकते हैं।

बांग्लादेश से मिल रहे संकेत खतरनाक

मुद्दा

– राकेश दुबे

पड़ोसी देश बांग्लादेश से जो संकेत मिल रहे हैं, वे बता रहे हैं कि अब वहां कट्टरपंथियों और भारत-विरोधी ताकतों का वर्चस्व होगा। आतंकवाद बढ़ेगा। बांग्लादेश में भी तालिबान सक्रिय होंगे। अभी तो वहां के प्रधानमंत्री आवास को आम जनता के लिए इस कदर खोल रखा गया है मानो कोई मेला लगा हो! कुछ युवा चेहरों की अश्लील, असभ्य, विद्रूप मानसिकता सार्वजनिक हुई है, जब उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना की अंतर्वस्त्र सरेआम लहराए हैं। ऐसे युवा कुछ भी हो सकते हैं, लेकिन आंदोलनकारी छात्र नहीं हो सकते। वे बेशर्म जमात भी हो सकते हैं, लेकिन अपने ही मुल्क का अपमान कर रहे हैं।

बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) और जमात-ए-इस्लामी दोनों ही कट्टरवादी दल हैं और पाकपरस्त भी। अंतरिम सरकार बनने से पहले ही दोनों दलों के करीब 9000 कार्यकर्ताओं को जेलों से रिहा कर दिया गया है। पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया और उनके पुत्र तारिक रहमान की सरपरस्ती में इन दलों ने आम जनसभा को संबोधित भी किया है। तारिक हत्या के तीन मामलों में उम्रकैद के सजायाफ्ता हैं, लेकिन वह लंदन में स्व-निर्वासन में थे। अभी ढाका लौट कर आए हैं, तो अदालतें फिलहाल खामोश और निष्क्रिय हैं। प्रधानमंत्री शेख हसीना की सरकार में मंत्री रहे 10 और अन्य बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया है।

संकेत हैं कि बीएनपी और जमात के साथ पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई ने 'सौदेबाजी' की है कि शेख मुजीब की सियासी विरासत की प्रतीक 'अवामी लीग' पार्टी का नामोनिशां ही मिटा दिया जाए, ताकि 1971 की बगावत की मुकम्मल सजा दी जा सके। हसीना के बांग्लादेश छोड़ कर चले जाने के साथ ही शेख मुजीब की सियासी विरासत तो समाप्त सी हो गई। पाकिस्तानी फौज गदगद है और लड्डू खा रही है। ऐसी सूचनाएं भी हैं कि आईएसआई लंदन में तारिक रहमान और जमात के नेतृत्व के साथ 2018 से ही 'तख्तापलट' की साजिश रच रही थी, लेकिन अभी तक नाकाम रही थी। मौजूदा आंदोलन का आवरण छात्रों का था, लेकिन उनकी आड़ में जमात और बीएनपी कार्यकर्ताओं ने ही आंदोलन को 'तख्तापलट' का रूप दिया था। जमात का छात्र संगठन ही आंदोलन और बगावत के पीछे सक्रिय था। बेशक शेख हसीना को मुल्क छोड़े तीन दिन गुजर चुके हैं, लेकिन बांग्लादेश के हालात अब भी सामान्य नहीं हुए हैं। करीब 125 लोग बीते एक दिन में मारे गए हैं। कुल मौतों की संख्या 450 से अधिक हो गई है। चूंकि प्रधानमंत्री के तौर पर हसीना भारत-समर्थक थीं। दोनों देशों ने कई साझा परियोजनाएं शुरू कीं और पुराने विवादों को भी खत्म किया। अब अंतरिम सरकार के दौर में कट्टरपंथी और भारत-विरोधी ताकतें ऐलानिया कह रही हैं कि उन परियोजनाओं की जांच और समीक्षा की जाएगी।

संकेत हैं कि बीएनपी और जमात के साथ पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई ने 'सौदेबाजी' की है कि शेख मुजीब की सियासी विरासत की प्रतीक 'अवामी लीग' पार्टी का नामोनिशां ही मिटा दिया जाए, ताकि 1971 की बगावत की मुकम्मल सजा दी जा सके। हसीना के बांग्लादेश छोड़ कर चले जाने के साथ ही शेख मुजीब की सियासी विरासत तो समाप्त सी हो गई। पाकिस्तानी फौज गदगद है और लड्डू खा रही है।

बांग्लादेश के एक तबके का भारत-विरोध इससे स्पष्ट होता है कि बीते तीन दिनों में ही 30 हिंदू मंदिर तोड़ दिए गए। उनमें आस्था की देव-मूर्तियों को भी खंडित कर ध्वस्त किया गया। मंदिरों में आग लगा दी गई। हिंदुओं के 300 से अधिक घर और उनकी दुकानें तोड़ी गईं और आगजनी की गई। बीते कुछ सालों के दौरान करीब 3600 हिंदू मंदिरों को तोड़ा जा चुका है और उन्हें आग के हवाले किया जाता रहा है। सवाल यह है कि क्या बांग्लादेश हिंदू-विरोधी भी हो रहा है? बांग्लादेश में हिंदुओं की आबादी अब मात्र 7.9 प्रतिशत है, जबकि 1971 में देश-निर्माण के वक्त यह आबादी करीब 23 प्रतिशत थी। बेशक, यहाँ हिंदू अल्पसंख्यक हैं। क्या मोदी सरकार प्रभावी हस्तक्षेप करेगी? बीएनपी की सरकार पहले भी बांग्लादेश में रही है। जमात भी भारत का विरोध करती रही है। जमात तो 1971 में भी पाकिस्तानपरस्त था और बांग्लादेश बनाने के अभियान के खिलाफ था। यह भी हकीकत है कि बांग्लादेश कई मामलों में भारत के भरोसे रहा है।

हकीकत यह भी है कि अब बांग्लादेश में करीब 80 प्रतिशत सैन्य हथियार चीन से आते हैं। क्या नई सरकार चीन के साथ अपने संबंध मजबूत करेगी और भारत का खुलेआम विरोध करेगी? भारत के लिए घुसपैठ और शरणार्थियों का आना भी बेहद गंभीर चुनौती है। उसे किस तरह नियंत्रित किया जा सकता है? बहरहाल अभी तो निगाहें बांग्लादेश के घटनाक्रम पर टिकी रहेंगी। हिंदुओं पर हो रहे हमले भी चिंता पैदा करते हैं।

आजकल

मनी लॉन्ड्रिंग आरोपों की बुनियाद

सवाल है कि इतनी बड़ी तादाद में दर्ज होने वाले मामलों की बुनियाद में सबूतों का आधार कितना ठोस था और किन वजहों से प्रवर्तन निदेशालय पर पूर्वाग्रहों से ग्रस्त होकर कार्रवाई करने के आरोप लगते हैं! पिछले कुछ वर्षों से धनशोधन के आरोपों के तहत प्रवर्तन निदेशालय यानी ईडी और सीबीआइ की ओर से छापे या गिरफ्तारियों के मामले सुर्खियों में रहे हैं। इसके अलावा, ऐसे कई मामलों में होने वाली कार्रवाइयों की जैसी प्रकृति देखी गई, उसमें अब ईडी को विपक्ष की आवाज को दबाने का औजार बनाए जाने के आरोप भी लगने लगे हैं। इस मसले पर खुद सुप्रीम कोर्ट की ओर से भी प्रवर्तन निदेशालय को एहतियात बरतने या हिदायत देने की कोशिश हो चुकी है। मगर आज भी ऐसे आरोपों में साक्ष्यों को लेकर शायद गंभीरता नहीं आ पाई है या फिर इसमें एक परिपक्व दृष्टि का अभाव दिखता है। शायद यही वजह है कि बुधवार को एक बार फिर सुप्रीम कोर्ट ने धनशोधन के मामलों में दोषसिद्धि की बहुत कम दर का हवाला देते हुए ईडी से अभियोजन और साक्ष्य की गुणवत्ता पर ध्यान देने को कहा। यह छिपा नहीं है कि बीते कुछ समय से धनशोधन के आरोपों में छापा या फिर गिरफ्तारी के लगातार मामले सामने आ रहे हैं, मगर उनमें से बहुत कम मामलों में आरोप साबित हो रहे हैं। इसी के मद्देनजर सुप्रीम कोर्ट ने ईडी को दोषसिद्धि की दर को बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक जांच करने की सलाह दी। दरअसल, पहले भी धनशोधन के आरोप पर होने वाली कार्रवाइयों को लेकर कई तरह के सवाल उठते रहे हैं और बिना मजबूत साक्ष्य के आधार पर गिरफ्तारी के मामलों की विश्वसनीयता कसौटी पर रही है। इसके बावजूद लगातार इस तरह के आरोप में छापे या गिरफ्तारी के मामले सामने आए। हकीकत यह है कि धनशोधन के मामले में गैरकानूनी गतिविधियों के आरोप के साथ ईडी ने कार्रवाई करने में जितनी हड़बड़ी दिखाई, उतनी ही शिद्दत से आरोपों को साबित करने के लिए साक्ष्य पेश नहीं किए। नतीजतन, ऐसे मामलों में दोषसिद्धि की दर काफी कम रही। गौरतलब है कि केंद्रीय गृह मंत्रालय ने मंगलवार को लोकसभा में यह जानकारी दी कि ईडी ने सन 2014 से लेकर 2024 के बीच धनशोधन निवारण अधिनियम यानी पीएमएलए के तहत कुल पांच हजार दो सौ सत्तानबे मामले दर्ज किए, लेकिन इनमें से सिर्फ चालीस आरोपों में ही दोष सिद्ध हो सका। सवाल है कि इतनी बड़ी तादाद में दर्ज होने वाले मामलों की बुनियाद में सबूतों का आधार कितना ठोस था और किन वजहों से प्रवर्तन निदेशालय पर पूर्वाग्रहों से ग्रस्त होकर कार्रवाई करने के आरोप लगते हैं! अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि शीर्ष अदालत को यह कहने की जरूरत पड़ी कि जिन मामलों में प्रथम दृष्टया मामला बनता है, प्रवर्तन निदेशालय को उन्हें अदालत में साबित करने की जरूरत है। अदालत की यह टिप्पणी यही दर्शाती है कि जिस तेजी से धनशोधन के मामलों में ईडी ने कार्रवाई किए, उसे साबित करने को लेकर उसके भीतर कोई गंभीरता नहीं दिखी। इसकी क्या वजहें हो सकती हैं? आखिर क्या कारण है कि विपक्षी दलों को प्रवर्तन निदेशालय की मंशा पर और उसके सरकार के इशारे पर काम करने की प्रवृत्ति पर सवाल उठाने का मौका मिलता है? गैरकानूनी धनशोधन के मामलों की जांच और कार्रवाई की जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए अगर दर्ज मामलों में दोषसिद्धि की दर बेहद कम है तो क्या यह प्रवर्तन निदेशालय की साक्ष्यों को लेकर गंभीरता में कमी का सूचक नहीं है? यह ध्यान रखने की जरूरत है कि ईडी जैसी सरकारी एजंसी की विश्वसनीयता या साख उसकी कार्रवाइयों की बुनियाद और उसमें दोषसिद्धि की दर के आधार पर बनती या बिगड़ती है।

स्वच्छ घरेलू ऊर्जा के अधिक उपयोग से कम होगा प्रदूषण

दृष्टिकोण

अमिताभ पाण्डेय

खाना पकाने, गर्म करने और अन्य घरेलू गतिविधियों के लिए ठोस ईंधन के घरेलू उपयोग से होने वाला उत्सर्जन भारत में भी वायु प्रदूषण का एक प्रमुख स्रोत बना हुआ है। यह उत्सर्जन ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को अपेक्षाकृत अधिक प्रभावित करता है। यह शहरी क्षेत्रों में भी वायु गुणवत्ता को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

वैश्विक स्तर पर बेहतर सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए काम करने वाली संस्था वाइटल स्ट्रैटेजीज की एक नई रिपोर्ट में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि स्वच्छ घरेलू ऊर्जा के स्रोत, तरलीकृत पेट्रोलियम गैस (एलपीजी) का निरंतर, लगभग अनन्य उपयोग, घरेलू वायु प्रदूषण के जोखिम को कम करने और जनसंख्या स्तर पर बेहतर सार्वजनिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है। इस स्वच्छ-जलने वाले ईंधन के उपयोग से वायु प्रदूषण कम होगा। ऐसा होने से हर साल 1 लाख 50 हजार लोगों की जान बच सकती है। इसका कारण यह है कि भारत में खाना, चाय , नाश्ता बनाने के लिए जिन घरों लकड़ी, कोयला जलाया जाता है वहां वायु प्रदूषण अधिक होता है। वायु प्रदूषण के कारण पैदा होने वाली बीमारियों से भारत में हर साल 1 लाख 50 हजार से ज्यादा लोगों की मौत हो जाती है। यदि घरेलू काम में लकड़ी, कोयले की जगह एल पी जी गैस का उपयोग बढ़ाएं तो वायु प्रदूषण न्यूनतम हो सकता है। घरेलू वायु प्रदूषण से होने वाली विभिन्न बीमारियों, असमय मौत को रोका जा सकता है। इस बारे में वाइटल स्ट्रैटेजीज में पर्यावरण और जलवायु स्वास्थ्य की उपाध्यक्ष सुमी मेहता ने कहा, च्हम खाना पकाने और गर्म करने के लिए ठोस ईंधन पर निर्भरता के कारण हर साल हज़ारों लोगों की जान गंवाते हैं ।ज च्स्वास्थ्य लाभ को अधिकतम करने के लिए स्वच्छ घरेलू ऊर्जा के लगभग अनन्य उपयोग और निरंतर उपयोग की आवश्यकता होगी। इस रिपोर्ट के निष्कर्ष लक्षित सब्सिडी की रूपरेखा तैयार करके देश में एलपीजी के उपयोग को बढ़ाने के लिए एक रोडमैप प्रदान करते हैं जो लागत प्रभावी और व्यवहार्य समाधानों के माध्यम से व्यक्तिगत और सामुदायिक स्वास्थ्य में सुधार करते हैं। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (पीएमयूवाई) कार्यक्रम, गरीब लोगों के लिए स्वच्छ घरेलू ऊर्जा के पैमाने को बढ़ाने के लिए भारत सरकार का प्रमुख प्रयास, एलपीजी तक पहुंच में वृद्धि हुई। फिर भी, कई घर ठोस ईंधन का उपयोग करना जारी रखते हैं। रिपोर्ट में स्वच्छ घरेलू ऊर्जा के चल रहे उपयोग का समर्थन करने के लिए विभिन्न सब्सिडी विकल्पों की लागत-प्रभावशीलता पर राज्य-स्तरीय विश्लेषणों का सारांश दिया गया है। इस रिपोर्ट में प्रत्येक परिदृश्य के राज्य-वार स्वास्थ्य और आर्थिक प्रभाव प्रस्तुत किए गए हैं। मुख्य निष्कर्ष और सिफारिशें इस प्रकार हैं-

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (पीएमयूवाई) के तहत आने वाले परिवारों और एलपीजी तक पहुंच से वंचित परिवारों द्वारा विशेष रूप से तरलीकृत पेट्रोलियम गैस (एलपीजी) के उपयोग को बढ़ावा देने से प्रतिवर्ष 150,000 से अधिक मौतों को रोका जा सकता है।

सबसे बड़ा स्वास्थ्य लाभ कम वजन वाले जन्म के कारण होने वाली शिशु मृत्यु दर में कमी से आता है, इसके बाद क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (सीओपीडी) से होने वाली मृत्यु में कमी आती है।

गर्भवती महिलाओं के लिए लक्षित सब्सिडी प्रदान करना अत्यधिक लागत प्रभावी होगा तथा इससे महत्वपूर्ण स्वास्थ्य और आर्थिक लाभ प्राप्त होंगे।

एलपीजी के उपयोग से समग्र परिवेशी वायु प्रदूषण में घरेलू वायु प्रदूषण के योगदान को कम करने की क्षमता है, जिससे राष्ट्रीय मानकों के साथ-साथ विश्व स्वास्थ्य संगठन के स्वास्थ्य-आधारित दिशा-निर्देशों को प्राप्त करना अधिक संभव हो जाएगा। वाइटल स्ट्रैटेजीज़ के वरिष्ठ संचार प्रबंधक शाश्वत राज ने बताया कि वाइटल स्ट्रैटेजीज ऐसी संस्था है जो बेहतर स्वास्थ्य के साथ ही बेहतर पर्यावरण के लिए काम करती है। इस संस्था का मानना है कि हर व्यक्ति को एक न्यायसंगत और प्रभावी सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली द्वारा संरक्षित किया जाना चाहिए। व्हाइटल स्ट्रेटेजीज के प्रतिनिधि दुनिया भर की सरकारों, समुदायों और संगठनों के साथ मिलकर बेहतर सार्वजनिक स्वास्थ्य की कल्पना करते हैं । इस कल्पना को साकार करने के लिए अनेक कार्यक्रम चलाते हैं ताकि हम जहाँ भी रहते हैं, काम करते हैं और खेलते हैं, वहाँ बेहतर स्वास्थ्य का समर्थन किया जा सके। इसका परिणाम यह है कि लाखों लोग लंबे और स्वस्थ जीवन का आनंद ले रहे हैं।